International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-07-2021, Accepted: 12-08-2021, Published: 30-08-2021
Volume 7, Issue 4, 2021, Page No. 162-163

जन कवि नागार्जुन और उनका काव्य

ज्योत्स्ना आनंद
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
आलेख का ध्येय जनवादी कविता के दौर के उन्मुक्त कवि नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र) के काव्य के विभिन्न आयामों की पड़ताल करना है। नागार्जुन की कविता सचेत पाठक के मन और समाज को संस्कारित करती है। जीवन का संघर्ष ही नागार्जुन के काव्य की जलवायु है। नागार्जुन ही एकमात्र कवि हैं जिन्होंने साहित्यिक गलियारों में सामाजिक– राजनीतिक व्यंग्य को आधार बनाकर वीभत्स को भी नवीन शक्ति प्रदान की है। शोध– आलेख के माध्यम से नागार्जुन के काव्य में वर्णित प्रेम, प्रकृति, व्यंग्य, समाज एवं राजनीति इत्यादि को जीवंत अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः कविता, समाज, जनवादी कविता, व्यंग्य, आंदोलन, यथार्थवाद।

प्रस्तावना

नागार्जुन स्वतंत्र भारत के एक ऐसे साहसी व विद्रोही कवि हैं जिनकी कविता प्रगतिशील मूल्यों पर विश्वास करने वाली सशक्त परंपरा का महत्त्वपूर्ण अंश है। वह किसी आयातित आंदोलन की देन नहीं हैं। इनकी कविता की दुनिया बहुत व्यापक है। इनकी कविताओं में कहीं मानव.मन की गंभीर रागात्मक सौंदर्यमयी छवियाँ देखने को मिलती हैं तो कहीं सामाजिक विद्रूपताओंए धार्मिक अव्यवस्थाओं और धार्मिक अंधविश्वासों पर आघात दिखाई पड़ता है। नागार्जुन ने ऐसे विषयों पर भी कविताएँ लिखी हैं जिन पर पहले कभी कविता नहीं लिखी गई थी। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों व समुदायों को अपनी कविता का विषय बनाया है। यहाँ तक कि उस आदिवासी समुदाय पर भी उन्होंने कविताएँ लिखी है जो हिंदी साहित्य में उपेक्षित रहा। इसके अतिरिक्त विभिन्न जातियों एवं जीव.जंतुओं पर भी उन्होंने कविता लिखी है । इसकी पुष्टि इस बात से हो जाती है कि एक मादा सूअर भी उनके लिए कविता की प्रेरणा बन गई–

"धूप में पसकर लेटी है
मोटी–तगड़ी, अधेड़, मादा सुअर...."[1]

विषयों के चयन में नागार्जुन की दृष्टि का वैशिष्ट्य उन्हें दूसरे कवियों से अलगाता है। उनकी दुनिया बहुत व्यापक है। उसमें सागर हैंए जंगल हैंए ऋतुएँ हैं गाँव हैं अर्थात् मानवीय एवं प्राकृतिक अनंत जीवन है। उनके काव्य में मानव.जीवन के समस्त रंग दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने स्वयं को जन.सामान्य के साथ एकीकृत कर लिया था। यही कारण है कि उनकी कविताएँ कवि और जन.सामान्य के बीच पूर्ण तादात्म्य स्थापित करती हैं।

नागार्जुन अपने समय के उन महान कवियों में रहे जिनके यहाँ आलोचनात्मक यथार्थवाद का रचनात्मक समावेश मिलता है। वे प्रगतिशील और एक सीमा तक प्रयोगशील भी हैं । निम्न मध्यवर्गीय परिवार की पीड़ा को इन्होंने स्वयं झेला था । अपमानए उपेक्षा और दर्द को स्वयं सहकर भी कभी हार नहीं मानी थी । यही कारण है कि इनकी कविताओं में सर्वहारा वर्ग के लिए सहानुभूति दिखाई पड़ती है.

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।"[2]

देश की जनता का दुःख–दर्द इनकी कविताओं में पूरी तीव्रता के साथ व्यक्त हुआ है। विशेष रूप से गाँवों में रहने वाले ग़रीब व्यक्तियों की ज़िंदगी और उनके जीवन की त्रासदी का बहुत ही मार्मिक चित्रण इन्होंने किया है। उनकी कविता की एक पंक्ति है–फटे वस्त्र है घर से बाहर निकलेगी कैसे लजवंती। नागार्जुन ने सदैव संघर्षरत लोगों का साथ दिया। निम्नवर्ग के जीवन की विद्रूपताओंए सर्वहारा वर्ग की भूख और दरिद्रता को अपनी कविताओं द्वारा व्यक्त किया । यही कारण है कि नागार्जुन अभावग्रस्त श्रमिक एवं कृषक वर्ग के सर्वहारा माने जाते है। इन्होंने जन आंदोलन के लिए भी कविताएँ लिखीं।

यथार्थवादी होने के कारण नागार्जुन व्यक्ति को समाज.विकास की धारा में देखते हैं और भीतर तक झांककर जो कुछ देखते है उसे व्यंग्यात्मक शैली में व्यक्त कर देते हैं। व्यंग्य उनकी कविता में बहुत ही सशक्त रूप में व्यक्त हुआ है। उनके तीखे व्यंग्यों के कारण उन्हें आधुनिक कबीर भी कहा जाता है। जब वे बहुत गुस्से में होते है तब व्यंग्य लिखते हैं। इनकी व्यंग्य.कविताओं में निष्क्रिय क्षोभ नहीं हैए बल्कि करुणा से पैदा हुआ आक्रोश हैए जिसे आक्रामक क्षोभ कहा जा सकता है। श्रेष्ठ व्यंग्यकार की तरह नागार्जुन की पैनी दृष्टि सामाजिक यथार्थ को गहराई तक थाह लेती है और वे समाज की चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यंग्य को शस्त्र की तरह प्रयुक्त करते हैं। ऐसे में उनका मूल उद्देश्य समाज की जड़ता के अतिरिक्त परिवर्तन की गति को अवरुद्ध करने वाली शक्तियों को उखाड़ फेंकना हो जाता है। व्यंग्य की विदग्धता ने ही नागार्जुन की अनेक तात्कालिक कविताओं को कालजयी बना दिया हैए जिसके कारण वे कभी पुरानी नहीं होती और आज तक तात्कालिक बनी हुई है। ऐसा संभवतः इसलिए है कि वे मनुष्य के उत्पीड़न को बर्दाश्त नहीं कर पाते और फिर उस उत्पीड़न के लिए उत्तरदायी लोगों पर तीखा प्रहार करना चाहते हैं। तीक्ष्ण प्रहार करने के लिए व्यंग्य से बढ़कर दूसरा कोई उपयुक्त माध्यम नहीं है। यही कारण है कि व्यंग्य नागार्जुन की कविताओं का आंतरिक संस्कार बन गया है। सामाजिक सत्य को व्यक्त करने की प्रवृत्ति ने उनके व्यंग्य को तीक्ष्णता और तीव्रता प्रदान की। संभवतः इसीलिए आधुनिक हिंदी

कविता में नागार्जुन से बढ़कर कोई दूसरा व्यंग्यकार नहीं है। आधुनिक हिंदी कविता में सूक्ष्म चुटीले व्यंग्यों की दृष्टि से तो नागार्जुन की कविताएँ अपनी एक अलग पहचान रखती ही हैंए कहीं.कहीं वे उद्बोधनात्मक भी हो गई हैं–

खून पसीना किया बाप ने एक जुटाई फीस।
आँख निकल आई पढ़.पढ़ के नंबर आए तीस।
शिक्षा मंत्री ने सीनेट में कहा–अजी शाबास।
सोना ही हो जाता हराम यदि ज़्यादा होते पास।

नागार्जुन ने अपने अनुभव और रचना विधान की विविधता द्वारा आधुनिक हिंदी कविता में सरलता का समावेश किया। इन्होंने प्रकृति और प्रेम को भी कविता का विषय बनाया। प्राकृतिक सौंदर्य एवं वैयक्तिक जीवन की कोमल अनुभूतियां इनकी कविता में दृष्टिगत होती हैं। एक ओर प्रकृति का सहज उल्लसित रूप नागार्जुन को आकर्षित करता है तो दूसरी ओर रागात्मक संबंधों की अनुभूति। प्रकृति सदैव इनकी सहचरी रही है। बादलों और वर्षा ऋतु पर तो इन्होंने कई कविताएँ लिखी है। ष्बहुत दिनों के बादष् नामक कविता में प्रकृति का बहुत ही मनोरम वर्णन मिलता है–

“बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी भर देखी
पकी.सुनहली फसलों की मुस्कान।
अब की मैंने जी भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर.ढेर से ताजे टटके फूल।”[3]

नागार्जुन जब बहुत दिनों पश्चात अपने गाँव गए और वहाँ पकी फसलों को देखा तथा किशोरियों को खेतों में काम करते हुए देखा तो अपने इस सुखद अनुभव को अपने काव्य में चित्रित कर दिया। जैसे–

“अब की मैंने जी भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिलकंठी तान
अब की मैं जी भर छू पाया
अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल।”[4]

एक ओर नागार्जुन ने सहज मानवीय अनुभव की कविताएँ लिखी है तो दूसरी ओर गाँव की प्रकृति और संस्कृति के गहरे लगाव को अभिव्यक्त किया है । कहीं तो वे बादलों की लीला के गीत गाते हैं तो कहीं प्रकृति के बदलते रूपों का चित्रण करते है । प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए भी वे समाज की विद्रूपता को नहीं भुला पाते है । ष्काले.कालेष् कविता इसका ज्वलंत प्रमाण है–

काले.काले ऋतु.रंग
काली.काली वन–घटा
काली.काली छवि छटा
काले.काले परिवेश
काली.काली करतूत

नागार्जुन की कविताओं में उनकी भाषा के भी विविध रूप दिखाई पड़ते है। इनकी कविताएँ सामान्य जन को बहुत ही सहज और आत्मीय लगती है। उनके मन को तो छूती ही हैं साथ ही उनकी चेतना को जागृत कर उन्हें प्रेरित भी करती है। सपाट बयानी नागार्जुन की कविता की अद्भुत शक्ति है। नागार्जुन की भाषा लोक.भाषा के भी निकट है। उनकी कुछेक कविताओं में तत्सम शब्दावली का अधिक प्रयोग हुआ है परंतु अधिकतर कविताओं की भाषा सरल है। तद्भव और ग्रामीण शब्दों के प्रयोग के कारण इनकी कविताओं में एक विचित्र प्रकार की मिठास आ गई है।

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि नागार्जुन आधुनिक हिंदी कविता के एक हस्ताक्षर है। उनका संपूर्ण साहित्य उच्च कोटि का है। उनकी कविता जनसाधारण की कविता है, मनुष्य के दुःख–दर्द की कविता है। निस्संदेह नागार्जुन एक यथार्थवादी रचनाकार है परंतु उनका यथार्थबोध बहुरंगी है । उसके अंतर्गत विचार, भाव संवेदना, सौंदर्य आदि सभी रंग उपस्थित हैं। नागार्जुन अपने युग के साथ–साथ आज भी जन–संचेतक के रूप में प्रासंगिक है और भविष्य में भी रहेंगे।

संदर्भ

1. नागार्जुन रचना संचयन :: राजेश जोशी (संपादक), साहित्य अकादेमी, मुद्रक : नवचेतन प्रिंटर्स, नई दिल्ली – 110055, पृष्ठ . 101
2. अकाल और उसके बाद (कविता) :: नागार्जुन : एकलव्य प्रकाशन, आर . के सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि., भोपाल द्वारा मुद्रित, पृष्ठ. 1–4
3. नागार्जुन रचना संचयन :: राजेश जोशी (संपादक), साहित्य अकादेमी, मुद्रक : नवचेतन प्रिंटर्स, नई दिल्ली – 110055, पृष्ठ. 31
4. नागार्जुन रचना संचयन :: राजेश जोशी (संपादक), साहित्य अकादेमी, मुद्रक : नवचेतन प्रिंटर्स, नई दिल्ली – 110055, पृष्ठ. 31